RANIGANJ GIRLS' COLLEGE

HINDI DEPARTMENT

DIGITAL WALL MAGAZINE

मंगलेश डबराल

अनुषा भारती
मंगलेश डबराल

विषयानुक्रमणिका

Section	Slide number
➢ मंगलेश डबराल की जीवनी और कृतित्व	5-8
➢ मंगलेश डबराल की कविताओं की विशेषताएँ	9-12
➢ मंगलेश डबराल के गद्य संग्रह और उनका उद्देश्य	13-15
➢ मंगलेश डबराल के यात्रा-वृत्तान्त की विशेषताएँ	16-17

मंगलेश डबराल की जीवनी और कृतित्व

जन्म :— मंगलेश डबराल का जन्म 16 मई 1948 को टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड जिले में काफलपानी गांव में हुआ।

शिक्षा :— मंगलेश डबराल की शिक्षा - दीक्षा देहरादून में हुई। स्कूल जीवन से ही उन्हें हिन्दी साहित्य की ओर रुचि रही।

कार्य :— मंगलेश डबराल दिल्ली आकर हिन्दी पैट्रियट, प्रतिपक्ष और आसपास में काम करने लगे, फिर वे भोपाल में 'मध्यप्रदेश कला परिषद' भारत भवन से प्रकाशित साहित्यिक त्रैमासिक पूर्वाग्रह में सहायक संपादक रहे। उसके बाद इलाहाबाद और लखनऊ से प्रकाशित 'अमृत प्रभात' में भी कुछ दिन नौकरी की। सन् 1983 में 'जनसत्ता' में साहित्य का संपादक करने के बाद वे नेशनल बुक ट्रस्ट से जुड़े रहे।

साहित्यिक कृतियाँ

कथन संग्रह :- 'पहाड़ पर लालटेन' (1981), 'घर का रास्ता' (1988), 'हम जो देखते हैं' (1995), 'आवाज भी एक जगह है' (2000), 'नये युग में शत्रु' (2013) ई०, 'स्मृति एक दूसरा शहर है' (2019) अंतिम काव्य संग्रह।

कविताएँ :- अन्तराल, आदिवासी, उस स्त्री का प्रेम, कुछ देर के लिए, गुमशुदा, जापान : दो तस्वीरें, नया बैंक, पंचम, पिता का चश्मा, बची हुई जगहें आदि।

गद्य संग्रह :- 'लेखक की रोटी' (1997), 'कवि का अकेलापन' (2016) ई०।

यात्रावृत :- 'एक बार आयोवा' (1996), एक सड़क एक जगह (2019) ई०।

संपादन :- 'रेतघड़ी' (राजस्थान के शिक्षक कवियों की कविताएँ), 'कविता उत्तरशती (पचास वर्षों की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन)।

साक्षात्कार :- उपकथन (2014) ई०।

पद :— उत्तराखंड के निवासी मंगलेश डबराल जन-संस्कृति मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं।

योगदान :— मंगलेश डबराल का जीवन उतार-चढ़ाव व संघर्षों से भरा हुआ था। उन्होंने अपने राजनीतिक व सामाजिक योगदान दिये हैं, नब्बे के दशक कि सोवियत विहीन एक ध्रुवीय होती दुनिया में जब पूंजीवाद और सांप्रदायिकता के नाखून लगातार लंबे हो रहे थे, तब मंगलेश डबराल अपनी कविताओं के माध्यम से इनके विरुद्ध आवाज उठाते हैं।

सम्मान :— ओम प्रकाश स्मृति सम्मान (1982), श्रीकान्त वर्मा पुरस्कार (1989), शमशेर सम्मान (1995) और पहल सम्मान (1996) है। वर्ष 2000 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 'आधारशिला' पुरस्कार 2001 में। 'पहल' सम्मान पाने वाले मंगलेश डबराल पहले कवि हैं।

मृत्यु :— मंगलेश डबराल का निधन कोरोना से संक्रमित होने के कारण 9 दिसम्बर 2020 को वसुधरा, गाजियाबाद के एक अस्पताल में हुआ।

मंगलेश डबराल की कविताओं की विशेषताएँ

मंगलेश डबराल की कविताएँ हिन्दी साहित्य में अमूल्य स्थान रखती हैं। उनकी कविताओं में समसामयिक कई समस्याएँ उजागर हुई हैं। 1970 के दशक में उनकी कविताओं ने हिन्दी साहित्य में एक अमूल्य छाप छोड़ी। उसी समय उनका कवि रूप उभर कर आया। उनकी कविताओं में पूँजीवाद में पनप रही समस्याओं, मुक्त बाजार से उत्पन्न हो रहे भ्रम, आपातकाल, नक्सलवाद की समस्या और छात्रों में पनप रही अशांति की सुगबुगाहट को स्पष्ट देखा जा सकता है। 2002 के गुजरात दंगों के संदर्भ में लिखी गयी उनकी कविताएँ अविस्मरणीय हैं। 'गुजरात के मृतक का बयान' कविता असहनीय पीड़ा से भरी हुई कविता है। जब वे कहते हैं -

"पहले भी शायद मैं थोड़ा-थोड़ा मरता था
बचपन से ही धीरे-धीरे जीता और मरता था
जीवित बचे रहने की अन्तहीन खोज ही था जीवन
जब मुझे जलाकर पूरा मार दिया गया।"

मंगलेश डबराल की कविताओं में आम जनमानस का मौन दुख समाहित है। वे चित्रकार कर अपनी बात नहीं कहते हैं। बल्कि धीरे-धीरे शांत भाव से अपनी बात रखते हैं। उनकी कविताओं में गहन चिंतन है। 'गुजरात के मृतक का बयान' में वे आगे कहते हैं:—

"क्या तुम मुझमें अपने किसी स्वजन को खोजते हो
किसी मित्र परिचित को या खुद अपने को
अपने चेहरे में लौटते देखते हो किसी चेहरे को।"

मंगलेश डबराल के अभी तक छह काव्य-संग्रह आ चुके हैं। वे छह काव्य संग्रह हैं- पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं, आवाज भी एक जगह है, नए युग में शत्रु। उन छहों संग्रहों की कविताएँ एक से बढ़कर एक एवं उत्कृष्ट हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन को स्पष्ट देखा जा सकता है। एक तरह से उनकी कविताएँ परिवर्तित हो रहे समाज में जीवन की सार्थकता को तलाशती हैं। डिजिटल हो रही दुनिया में आम इंसान किस तरह अपनों से कटता जा रहा है।

इंसान का दूसरे इंसानों से वार्तालाप कम होता जा रहा है। ऐसे में कवि 'समय नहीं है' कविता के माध्यम से वर्तमान की ज्वलंत समस्या को उठाते हुए कहते हैं.—

"मैं देखता हूँ तुम्हारे भीतर पानी सूख रहा है,
तुम्हारे भीतर हवा खत्म हो रही है
और तुम्हारे समय पर कोई और कब्जा कर रहा है।"

मंगलेश डबराल की कविताओं में प्रत्येक इंसान की आभिव्यक्ति शक्ति समाहित है। उनकी कविताएँ आम जनमानस के नजदीक की कविता है। इन कविताओं को पढ़कर लगता है कि यह हमारी, हम सब की बात कह रही है। उनकी कविताओं में छोटी-छोटी समस्याओं का चित्रण सरल ढंग से हुआ है। उनमें सामान्य बात में गंभीर अर्थ ढूंढने की अद्भुत क्षमता है। इन कविताओं को पढ़कर ऐसा लगता है कि जैसे ये हम सब के हृदय की बात कह रहे हैं। उनकी कविताओं में प्रत्येक वर्ग के लिए जगह है। वे किसी से पक्षपात नहीं करते। इसी कारण 'पहाड़ पर लालटेन' कविता में असहाय स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों के माध्यम से अपनी सबल अभिव्यक्ति व्यक्त करते हुए कहते हैं:—

"जंगल में औरतें हैं
लकड़ियों के गट्ठर के नीचे बेहोश
जंगल में बच्चे हैं
असमय दफनाये जाते हुए
जंगल में नंगे पैर चलते बूढ़े हैं
डरते खांसते अंत में गायब हो जाते हुए
जंगल में लगातार कुल्हाड़ियाँ चल रही हैं
जंगल में सोया है रक्त ।"

उद्धृत कविता में स्त्रियाँ, बच्चे और बूढ़ों की मार्मिक वेदना ही केवल व्यक्त नहीं हुई है, बल्कि कट रहे जंगल की करुण व्यथा भी व्यक्त हुई है। जंगल प्रतिदिन सपाट होते जा रहे हैं। वहाँ बड़े - बड़े कंक्रीट के महल बन रहे हैं। ऐसे में जंगल और जंगल में रहने वालों की खबर लेने वाला कोई नहीं है। वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत कविता उत्कृष्ट है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि मंगलेश डबराल की कविताएँ समय के साथ चलती हैं। उनकी कविताओं में सांस्कृतिक पारिवारिक, मानवीय, पूँजीवाद, बाजारवाद, राजनीतिक और सांप्रदायिकता की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

मंगलेश डबराल के गद्य संग्रह और उनका उद्देश्य

मंगलेश डबराल कवि के रूप में अपनी जगह पहले ही स्थापित कर चुके थे, साथ ही गद्य भी उनकी कविता की तरह जीवंत और अर्थपूर्ण है। उनके प्रमुख गद्य संग्रह हैं :- लेखक की रोटी, कवि का अकेलापन और उपकथन। इनमें निहित उद्देश्यों को निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है :-

लेखक की रोटी

मंगलेश डबराल अपनी इस कृति के माध्यम से नए आयामों को पाठक के सामने प्रस्तुत करते हैं इसमें वे हत्या, अत्याचार, उपभोक्तावाद, बाजारवाद, शोषण आदि जैसी समस्याओं को चित्रित करते हैं और साथ ही अपनी चिन्ता भी व्यक्त करते हैं। इसमें वे कवियों, लेखकों की स्मृतियों को जगह देते हैं तथा समाज, संस्कृति, सिनेमा, व्यक्तियों एवं विभिन्न घटनाओं का भी उल्लेख भी करते हैं। इस लिए उनके गद्य में भी एक प्रकार की तेजस्विता दिखाई देती है।

कवि का अकेलापन

कवि का अकेलापन दो हिस्सों में बँटा हुआ है। पहले हिस्से में मंगलेश जी ने अपने कुछ प्रिय कवियों की रचनाओं तथा उनकी पंक्तियों की व्याख्या करते हुए उनके भाव-भूमि को समझाने की कोशिश की है। अलग-अलग स्थितियों और विषयों, विचारों के साथ-साथ स्वयं अपनी सोच और कल्पना को भी प्रस्तुत करते हैं।

दूसरे हिस्से में कवि की अव्यवस्थित डायरी है। इस डायरी के माध्यम से एक बेचैन व्यक्ति, एक पुत्र, एक दोस्त, एक संगीत-प्रेमी, एक आम नागरिक के रूप में अपने आपको पाठक के के सामने खोलने का प्रयास करते हैं। वे यहाँ वे यह बताने की कोशिश करते हैं कि एक कवि अपने अकेलेपन में किसी तरह अपने चारों ओर फैली विसंगतियों और न जाने कितने ही अमूर्तों की पहचान कर उन्हें साकार कर सकता है।

उपकथन

'उपकथन' मंगलेश डबराल के साक्षात्कार का एक संग्रह है जिसमें उन पंद्रह संवादों को निहित किया है जो विभिन्न लेखकों, पत्रकारों और आलोचकों द्वारा मंगलेश डबराल के साथ किये गये हैं। इस रचना में निहित संवादों के माध्यम से हम मंगलेश डबराल के काव्य-जगत में प्रवेश करने के लिए उद्देश्यों को जान पाते हैं साथ ही हम यह जान पाते हैं कि पहाड़ों से चलकर

दिल्ली जैसे महानगर में आने पर उन्होंने क्या-क्या महसूस किया। इसमें निहित संवाद, कवि के बाह्य जगत से हमें साक्षात्कार कराते हैं। मंगलेश डबराल मूलतः एक कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं लेकिन उनका गद्य क्रम भी अर्थपूर्ण एवं महत्वपूर्ण है।

मंगलेश डबराल के यात्रा- वृत्तांत की विशेषताएँ

1996 ई० में मंगलेश डबराल का यात्रा - वृत्तांत 'एक बार आयोवा' का प्रकाशन हुआ। यह उनकी प्रथम गद्य रचना है। यह मंगलेश डबराल का यात्रा- वृत्तांत ही नहीं यह एक कैनवस की तरह है जिसमें हमें अमेरिका दिखाई देता है। इस रचना की एक विशेषता यह है कि इसमें दृश्यात्मक गुण है। इसे पढ़ने से ऐसा लगता है कि हम आयोवा घूम रहे हैं। अमेरिका को कुछ ज्यादा अच्छे से समझाने के लिए ही मंगलेश डबराल ने उसके दैनिक जीवन, सांस्कृतिक और समाजिक वातावरण के बारे में कुछ प्रमाणिक सूचनाएँ भी दिए है।

आयोवा करीब डेढ़ सौ साल पुराना शहर है। लेकिन पुरानेपन की गंध यहाँ बिल्कुल अनुभव नहीं होती। मंगलेश ने अपने अनुभवों और छोटे- छोटे विवरणों के माध्यम से अमेरिकी समाज की विशिष्टताओं को बारीकी से चित्रित किया है। इस यात्रा- वृत्तांत में डबराल ने अन्य कवि, लेखकों से चर्चा, भाषण, करके और उनकी साहित्यतीक अनुभावों को उद्घाटित किया है। एक जगह वे इस यात्रा- वृत्तांत में कहते हैं- "मेफ्लावर के सामने आयोवा नदी के किनारे एक पुरानी वीरान बेंच। मैंने इस पर कभी किसी को बैठे नहीं देखा। बारिश, बर्फ और पेड़ों के पत्ते ही इस पर बैठते हैं। धूप है। एक बड़ा सा बादल आसमान से आता है और

लगता है जरा सा झटका हुआ है। जैसे अभी-अभी आसमान से गिर पड़ेगा। चेहरे पर धुँध एक ठंडे रूमाल की तरह चिपक गई है। आजीवा शांत बह रही है।" स्पष्ट देखा जा सकता है कि लेखक ने सहज और सशक्त चित्रण किया है।

इसी तरह 1919 ई० में उनका दूसरा यात्रा-वृत्तांत 'एक सड़क एक जगह' आया। इसमें उन्होंने नीदरलैंड्स, पेरिस और जर्मनी की यात्राओं के साथ-साथ अपने पहाड़ के एक गाँव हर्षिल की यात्रा का भी सुन्दर चित्रण किया है। "एक सड़क एक जगह" को पढ़कर शहर, देश और दुनिया का दृश्य जीवंत हो उठता है। पेरिस के बारे में वे लिखते हुए कहते हैं—"शायद पेरिस के भीतर जितना पेरिस है उससे कहीं ज्यादा बाहर है। पूरी दुनिया में उसकी जगहें, वस्तुएँ, उसके लोग और विचार फैले हुए हैं और पेरिस उन सभी चीजों के भीतर फैला हुआ है। वह प्रतीकों की भाषा में बात करता है। घटनाएँ, चीजें, जगहें, संस्कृति, रहन-सहन सब कुछ, यहाँ तक कि लोग और विचार भी पेरिस के ब्रांड हैं।"

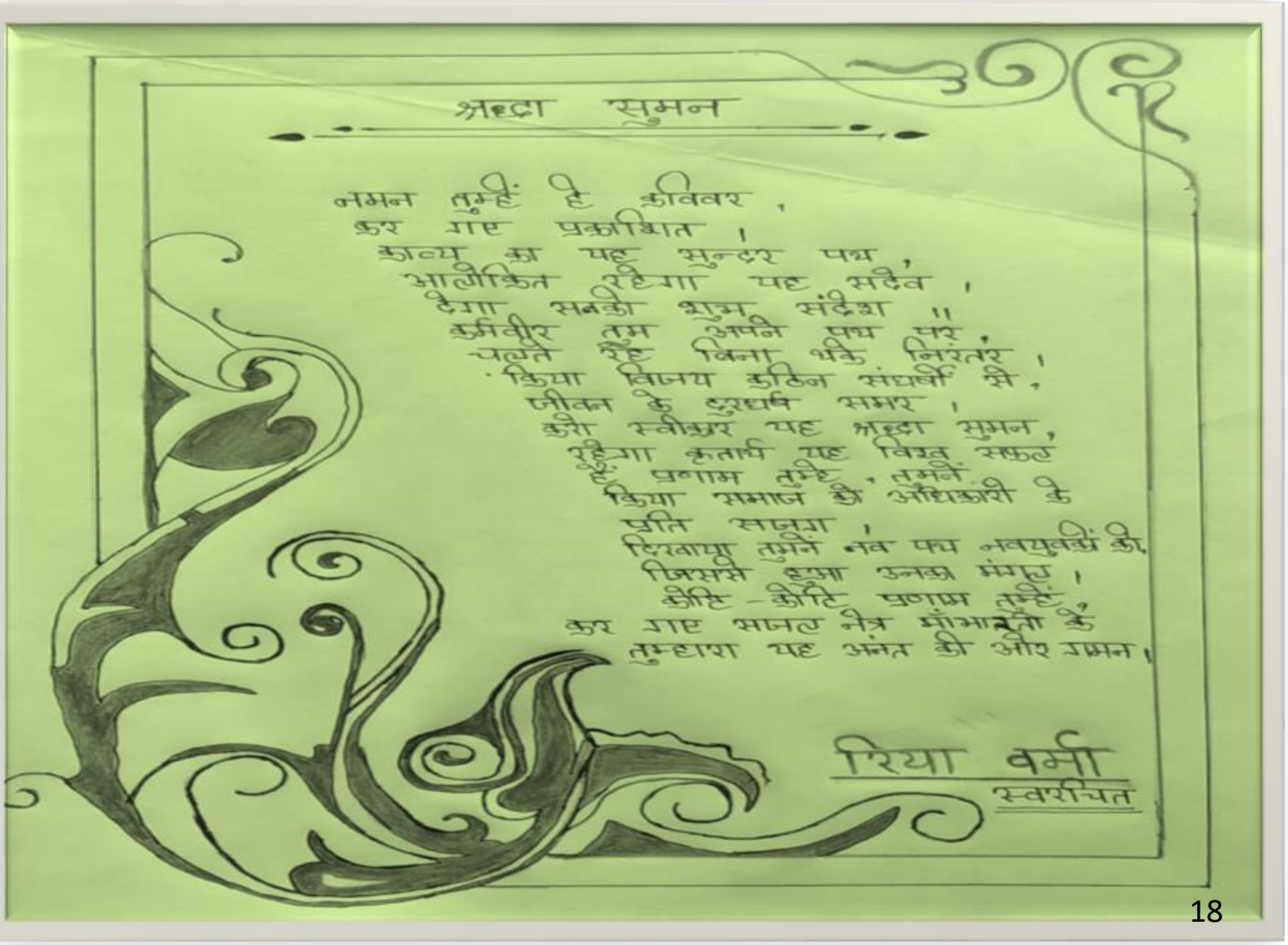

श्रद्धा सुमन

नमन तुम्हें हे कविवर,
कर गए प्रकाशित।
काव्य का यह सुन्दर पथ,
आलोकित रहेगा यह सदैव।
देगा सबको शुभ संदेश॥
कर्मवीर तुम अपने पथ पर,
चलते रहे बिना थके निरंतर।
किया विजय कठिन संघर्षों से,
जीवन के दुर्धर्ष समर।
करो स्वीकार यह श्रद्धा सुमन,
रहेगा कृतार्थ यह विश्व सकल
हे प्रणाम तुम्हें, तुमने
किया समाज को अधिकारों के
प्रति सजग।
दिखाया तुमने नव पथ नवयुवकों को,
जिससे हुआ उनका मंगल।
कोटि-कोटि प्रणाम तुम्हें,
कर गए सजल नेत्र माँ भारती के
तुम्हारा यह अनंत की ओर गमन।

रिया वर्मा
स्वरचित

योगदानकर्ता और संपादकीय बोर्ड

- मंगलेश डबराल की जीवनी और कृतित्व : अनुषा भारती, रिया वर्मा, श्वेता पंडित, ज्योति उपाध्याय, कंचन गुप्ता, आभा कुमारी (1st semester)
- मंगलेश डबराल की कविताओं की विशेषताएँ : रिता मिश्रा, आफिफा अहमद, नाहीद बेगम, आकांक्षा द्विवेदी, नबिहा खातून (1st semester)
- मंगलेश डबराल के गद्य संग्रह और उनका उद्देश्य : पूनम मिश्रा, खुशबू (1st semester)
- मंगलेश डबराल के यात्रा-वृत्तान्त की विशेषताएँ : इंद्रानी शर्मा, अंजली नोनिया (1st semester)

Teachers of Hindi Department

- डॉ. अनीता मिश्रा (Associate Professor)
- डॉ. जगमोहन सिंह (Assistant Professor)
- नीलम मिश्रा (SACT)
- डॉ. कृष्णा सिंह (SACT)
- प्रियंका सिंह (SACT)
- राजेंद्र महतो (SACT)

धन्यवाद